अंतस्

अयोध्या की भव्य रामलीला

भारतीय लोकमानस में रामलीला के प्रति अगाध श्रद्धा भाव नजर आता है। यह भाव भारत के लोक में रचा बसा है। प्रतिवर्ष शारदीय नवरात्रि प्रतिपदा से देशभर में रामलीला का मंचन शुरू हो जाता है, जो नवरात्रि के समापन के अगले दिन यानी दशहरे को रावण दहन के साथ समाप्त होती है। रामलीला तब बेहद खास हो जाती है, जब यह भगवान राम की नगरी अयोध्या में आयोजित की जा रही हो। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष फिर अयोध्या भव्य रामलीला महोत्सव की साक्षी बनने जा रही है। इस बार रामलीला का सातवां संस्करण आयोजित हो रहा है, जिसकी शुरुआत बीते सप्ताह भूमि पूजन के साथ हुई। प्रस्तुति-सत्यप्रकाश

रामनगरी अयोध्या में इस बार रामलीला का आयोजन बेहद खास है। रामकथा पार्क में भव्य रामलीला के सातवें संस्करण का भूमि पूजन किया गया। यह आयोजन धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक धरोहर का जीवंत प्रतीक है, जिसमें अयोध्या सहित पूरे देश के श्रद्धालु शामिल होते हैं। गौरतलब है कि अयोध्या की रामलीला का यह सातवां संस्करण 22 सितंबर से शुरू हो चुका है, जो 2 अक्टूबर को दशहरे पर रावण दहन के साथ समाप्त होगा। प्रतिदिन शाम 7 बजे से रात 10 बजे तक रामकथा पार्क में रामलीला का मंचन हो रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि अयोध्या की इस रामलीला का सीधा प्रसारण यूट्यूब और विभिन्न चैनलों पर भी हो रहा है, जिससे देश-विदेश के श्रद्धालु भी इस अद्भुत आयोजन का आनंद ले पा रहे हैं। आयोजकों का कहना है कि अयोध्या की रामलीला केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह नई पीढ़ी को रामायण के आदर्शों से जोड़ने का सशक्त माध्यम भी है। रामलीला का सीधा प्रसारण दूरदर्शन और अयोध्या की रामलीला के यूट्यूब चैनल पर किया जा रहा है, जिससे देश-विदेश में बैठे लाखों इसे देख रहे है। रामलीला का आयोजन अयोध्या की परंपरा, भव्यता और आस्था का अद्वितीय संगम है। रामकथा की यह गाथा एक बार फिर अयोध्या की धरती से पूरी दुनिया तक पहुंच रही है।

फिल्म जगत की नामचीन हस्तियां निभा रही हैं किरदार

अयोध्या की रामलीला में फिल्म और टीवी जगत के बड़े सितारे मंच पर दिख रहे हैं। राहुल भूचर प्रभु श्रीराम, अर्चना माता सीता, मनीष शर्मा रावण और राजेश पुरी हनुमान की भूमिका निभाते नजर आ रहे हैं। वहीं मनोज तिवारी बाली, रवि किशन केवट और बिंदू दारा सिंह भगवान शंकर का रोल निभा रहे हैं। इसके अलावा अवतार गिल सीता के पिता राजा दशरथ की भूमिका निभाते दिखेंगे और राकेश बेदी विभीषण का किरदार अदा कर रहे हैं। वहीं विनय सिंह कुंभकर्ण की भूमिका निभा रहे हैं। पुनीत इस्सर परशुराम का किरदार निभा रहे हैं। रजा मुराद अहिरावण का अभिनय करेंगे। इन नामी कलाकारों के जुड़ने से अयोध्या की रामलीला और भी भव्य हो गई है।

240 फीट रावण दहन और वीआईपी मेहमान

फिल्मी कलाकारों की रामलीला में 2 अक्टूबर को दशहरा में रावण दहन मुख्य आकर्षण होगा। पहली बार 240 फुट के रावण और 190 फुट के कुंभकर्ण व मेघनाद के पुतलों का दहन होगा। दिल्ली से आए आठ कारीगरों की टीम रामकथा पार्क के कॉरिडोर में इन पुतलों को तैयार कर रही है। इसमें कुछ मुस्लिम कारीगर भी हैं। मुख्य कारीगर मनोज कुमार ने बताया कि 25 वर्ष से हमारी टीम दिल्ली के विभिन्न रामलीला समिति के लिए कार्य कर रही है। इस बार अयोध्या में है और रावण, मेघनाथ, कुंभकरण के पुतलों के साथ-साथ सोने की लंका भी तैयार कर रहे हैं। अयोध्या की रामलीला समिति के अध्यक्ष सुभाष मलिक ने दावा किया कि इसमें आधुनिक तकनीक का प्रयोग दर्शकों को रोमांच से भर देगा। अयोध्या में पहली बार ऐसा आयोजन होने जा रहा है। आयोजन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक और पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह को भी आमंत्रित किया गया है। इस भव्य आयोजन के जरिए रामभक्ति की परंपरा और भी मजबूत होने जा रही है। फिलहाल प्रशासन ने पुतला दहन की अनुमति नहीं दी है।

अध्यात्म

मन

संपूर्ण संसार में यदि सर्वाधिक शक्तिशाली कोई है, तो वह है मन। मन को किसी ने देखा नहीं है, किंतु मन के अंदर शक्तियों का अपार भंडार विद्यमान है। एक सूक्ति है, 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत'। मन के अंदर असीम क्षमताएं एवं संभावनाएं विद्यमान हैं। जिस प्रकार हम पदार्थ के सूक्ष्मतम कण अर्थात परमाणु को नहीं देख पाते, किंतु उसमें अपार ऊर्जा सन्निहित है। ठीक उसी प्रकार मन कोई भौतिक वस्तु नहीं है, जिसके दर्शन कर पाना संभव हो। मन हमारे भौतिक शरीर से संबद्ध एक ऐसा भाग है, जिसका वर्णन भौतिक पैमाने पर किया जाना संभव नहीं है। मन को केवल अनुभव किया जा सकता है। मन के अस्तित्व के बिना शरीर का अस्तित्व भी पूर्णतया अर्थहीन ही होता है।

प्रेरणा अवस्थी
लेखिका

मन को शरीर का सारथी कहा गया है, क्योंकि शरीर पूर्णतया मन के अधीन रहता है। यह मन की शक्तियों का ही परिणाम है कि शरीर बड़े-बड़े उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को सिद्ध कर लेता है। अनेक ऐसे कारक हमारे चहुंदिश विद्यमान रहते हैं, जो मन को सदैव पतन की ओर अग्रसर करने के लिए प्रवृत्त होते हैं। बाह्य संसार, विभिन्न प्रकार के अनुभव, विषम परिस्थितियां, विभिन्न प्रकार के आवेग एवं भाव इत्यादि कुछ ऐसे ही कारक हैं। किंतु इन सभी कारकों के प्रभाव को एक अमोघ अस्त्र की सहायता से निष्क्रिय किया जा सकता है, वह अमोघ अस्त्र है-आत्मबल। आत्मबल से युक्त मन संसार का सर्वोत्तम एवं सर्वशक्तिमान अस्त्र है। आत्मबल को अपने भीतर जगाने के लिए हमें कहीं न कहीं अनावश्यक बाह्य तत्वों के फंदे से स्वयं को बाहर निकलना होगा। इसके लिए यह नितांत आवश्यक है कि हम अपना पूर्ण ध्यान स्वयं पर केंद्रित करें। ऐसा होने पर बाह्य कारक, जो निरंतर हमें विचलित करने का प्रयास करते रहते हैं, हमारे ऊपर लेशमात्र प्रभाव भी नहीं डाल पाएंगे। हमें मन की शक्ति को पहचानते एवं स्वीकारते हुए अपने प्रत्येक लक्ष्य को मन के हवाले करके आत्मबल का स्तर निरंतर ऊपर उठाने का प्रयास करते रहना चाहिए। ऐसा होते ही हम अपने जीवन में एक अभूतपूर्व परिवर्तन देखेंगे।

मन को शरीर का सारथी कहा गया है, क्योंकि शरीर पूर्णतया मन के अधीन रहता है। यह मन की शक्तियों का ही परिणाम है कि शरीर बड़े-बड़े उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को सिद्ध कर लेता है।

बोध कथा

सांच को नहीं आंच

स्वामी विवेकानंद ने युवावस्था में ही अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व विकसित कर लिया था, जो उनसे मिलता, उनकी प्रतिभा का कायल हो जाता। उनके अंग्रेज प्राध्यापक भी उनसे प्रभावित रहते थे। एक बार उनके कॉलेज के प्रिंसिपल डब्ल्यू. डब्ल्यू हेस्टी उनकी कक्ष में आए। किसी प्रसंग पर उन्होंने पूछा, 'नरेंद्र! यह बताओ नास्तिक कौन है?' यह सुनकर नरेंद्र ने कहा, 'सर, नास्तिक वह होता है, जो अपने में विश्वास नहीं करता। ईश्वर में विश्वास नहीं करता।' इस उत्तर को सुनकर हेस्टी साहब कुछ देर के लिए अवाक रह गए। फिर उन्होंने कुछ सोचकर कहा 'तो इसका अर्थ यह है कि इश्वर कहीं नहीं है।' इस पर नरेंद्र ने दृढ़तापूर्वक कहा, 'ईश्वर है सर। वह भारत के उन दरिद्र पंडित और दुर्बल लोगों में है, जिन्हें कभी तुर्क और मुगल शासक नोचते रहे और आजकल आपकी सरकार नोच रही है।' इस निर्भीक उत्तर को सुनकर हेस्टी साहब चकित रह गए। उन्होंने कहा, 'मैंने सुदूर देशों का भ्रमण किया है, पर अभी तक मुझे कहीं भी ऐसा लड़का नहीं मिला, जिसमें तुझ जैसी प्रतिभा और संभावनाएं हों। तू जीवन में जरूर अपनी छाप छोड़ जाएगा।' इतना कहकर हेस्टी साहब कक्ष से बाहर चले गए। छुट्टी के समय उन्होंने नरेंद्र को अपने ऑफिस में बुलाया फिर बड़े प्यार से बिठाते हुए कहने लगे, 'नरेंद्र तुमने क्लास में मुझ जो कुछ कहा, वह बिल्कुल सच है, लेकिन मैं तुम्हें हिदायत देता हूं कि ऐसी बातें किसी और अंग्रेज के सामने मत कहना, कभी मत कहना।' नरेंद्र ने पूछा, 'क्यों सर?' हेस्टी साहब बोले, 'वह तुम्हारी रिपोर्ट कर देगा और सरकार तुम्हें जेल भेज सकती है।' यह सुनकर नरेंद्र ने मुस्कुराते हुए कहा, 'सर! यदि सच बोलने से आपकी सरकार मुझे जेल भेज देगी, तो मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगा कि भारत का हर व्यक्ति मेरी तरह सच कहने लगे और आपकी सरकार सबको जेल का पानी पिलाने लग जाए।'

-सुरेन्द्र अग्निहोत्री, लेखक

संस्कृति व समृद्ध से पहाड़ की रामलीला

उत्तराखंड में रामलीला का एक विस्तृत इतिहास और विशिष्ट पहचान रही है। रामलीला कहीं की भी हो उस पर गोस्वामी तुलसीदास जी के कालजयी ग्रंथ रामचरितमानस का गहरा प्रभाव रहा है। उत्तराखंड की रामलीलाएं भी इससे अछूती नहीं रही हैं, लेकिन थोड़ा बहुत बदलाव करके स्थानीय बोली में मंचन होने के कारण परंपरागत रामलीला में पहाड़ की संस्कृतिक झलक मिलती है।

कुमाऊं के छह जनपदों के तकरीबन सभी नगरों व कस्बों में रामलीला का मंचन होता है। इस मंचन ने लोगों को इसके साथ गहराई से जोड़ा है। यहां की लोक संस्कृति व सभ्यता कितनी विस्तृत है इसकी पहचान उन दोहों व चौपाइयों से होती है, जो मंचन के समय कलाकार अपनी मधुर आवाज और विशिष्ट शैली में गाते हैं। यहां अधिकांश रामलीलाओं का मंचन शारदीय नवरात्र के प्रथम दिन से प्रारंभ होता है तथा दस दिन तक लगातार मंचन के पश्चात अंतिम दिन राम के राज्याभिषेक के साथ लीला का समापन होता है। अनेक स्थानों पर दशहरे के दिन रावण-कुंभकरण आदि के पुतले भी जलाए जाते हैं। वैसे अनंत चतुर्दशी से शरद पूर्णिमा तक का एक माह का समय रामलीला के मंचन का होता है।

कई शहरों की लीलाएं छिटककर इस परिधि से बाहर भी चली गई हैं। कुमाऊं में सबसे पहले रामलीला की शुरुआत सांस्कृतिक नगरी अल्मोड़ा में हुई थी। 1860 में अल्मोड़ा के तत्कालीन सदर अमीन बद्रीदत जोशी ने रामलीला का आयोजन किया था। उसके बाद अल्मोड़ा में रामलीला आयोजन को विस्तृत स्वरूप देने का श्रेय मोतीराम शाह को जाता है। सीमांत जिले पिथौरागढ़ में 1897 में तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर देवीदत्त ने रामलीला का आयोजन किया था। बागेश्वर में रामलीला प्रारंभ करने का श्रेय शिवलाल शाह को जाता है, जिन्होंने सबसे पहले 1890 में रामलीला प्रारंभ करवाई। हल्द्वानी में रामलीला की शुरूआत कन्हैया लाल सारस्वत द्वारा की गई थी। उनके द्वारा रामलीला के साथ-साथ दशहरा मेला के आयोजन की परंपरा भी शुरू की गई। अब तो कई सालों से हल्द्वानी मे दिन की रामलीला का आयोजन भी किया जाता है। हल्द्वानी में अब महिलाओं द्वारा भी रामलीला का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें सभी पात्र महिलाएं होती हैं। कुमाऊं का हरिद्वार कहे जाने वाले रानीबाग में रामलीला की शुरुआत 1976 में मोहन चंद्र मिश्रा द्वारा की गई थी। कुमाऊं में ज्योलिकोट, काठगोदाम, चोरगलिया, रामनगर, रुद्रपुर, काशीपुर की रामलीलाएं भी प्रसिद्ध हैं।

-दीपक नौगांई, लेखक

पौराणिक कथा

कर्म, पाप और मोक्ष का सार

महाराजा नृग बड़े ही दानवीर थे वह रोज एक हजार गाय ब्राम्हण को दान करते थे। एक बार उन्होंने एक ब्राह्मण को एक हजार गाय दान में दी। कुछ समय बाद ब्राह्मण की इन गाय में से एक गाय किसी तरह राजा नृग की गौशाला में फिर से आ गई। इस सत्य का पता ब्राह्मण को चला उसने गिनती की तो पाया की उसकी एक गाय कम है। दानवीर राजा ने पुनः अपनी गौशाला से एक हजार गाय एक अन्य ब्राह्मण को दान में दीं। इन गायों में से ब्राह्मण की भागी हुई गाय भी थी। उस पहले ब्राह्मण ने अपनी गाय पहचान ली और दूसरे ब्राह्मण को चोर कहा। दूसरे ब्राह्मण ने कहा, ऐसा नहीं है यह गायें हमें महाराज ने दान में दी हैं।

दोनों ब्राह्मणों का विवाद राजा के दरबार में पहुंचा, जांच करने पर पता चला कि पहले ब्राह्मण की गाय किसी तरह बिछुड़कर महाराज की गायों में आ मिली थी, महाराज ने भूलवश उसका फिर से दानकर दिया। स्थिति से अवगत होने पर राजा ने कहा कि ब्राम्हण उस गाय के बदले एक लाख गाय लेले, परंतु ब्राह्मण अपनी गाय ही लेने के लिए अडिग थे। ऐसी स्थिति होने पर महाराज नृग ने दूसरे ब्राह्मण से कहा कि वह पहले ब्राह्मण को उसकी गाय वापस कर दे उसके बदले में जितनी गाय चाहे लेले, परंतु ब्राह्मण उस गाय के अतिरिक्त दूसरी गाय लेने के लिए तैयार न हुआ। ईश्वरी विधान के अनुसार महाराज नृग ने गोलोक वास किया। यमराज और उनके सहयोगी चित्रगुप्त ने जब महाराज की पुण्य गणना की तो महाराज के अगणित पुण्य के साथ यह एक पाप भी था, उन्होंने कहा कि महाराज आप पहले अपने पुण्य भोगना चाहेंगे अथवा एक पाप कर्म भोगना चाहेंगे। इस पर राजा ने कहा कि वह पहले पाप कर्म भोगेंगे। परिणाम स्वरूप उन्हें गिरगिट की योनी में जन्म लेना पड़ा। अपने भोग स्वरूप महाराज एक सुखे कुएं में गिरगिट बनकर पड़े रहे। महाराज के इस कर्म संस्कार के द्वारा मिले पुर्वजन्म की आयु एवं भोग समाप्ति की अवधि आई तो भगवान श्री कृष्ण ने उनका उद्धार किया। भगवान ने राजा नृग से कहां कोई वरदान मांग लें। तब राजा ने कहा हे प्रभु यदि आप मुझमें पर प्रसन्न हैं तो यह बताएं की व्यक्ति अशुभ कर्मों के प्रभाव से कैसे बच सकता है? भगवान श्रीकृष्ण बोले हे राजन इसका एकमात्र उपाय यही है कि वह प्रत्येक कर्म केवल भगवान के लिए करे और परमेश्वर के अलावा किसी अन्य से भावनात्मक संबंध न जोड़ संपूर्ण अनाशक्ति और समर्पित भगवद्भक्ति ही जन्म आयु और भोग से बचने का उपाय है। *-पं. सोमदत्त अग्निहोत्री*